# भारतीय नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ

## बुधवार, २२ अक्टूबर, २०२५

भारतीय नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ! दीपावली के महापर्व के उपरान्त, अगले दिन, उत्तर भारत में, विशेष रूप से गुजरात में नववर्ष दिवस मनाया जाता है। भारतीय पंचांग के अनुसार वर्ष के साढ़े तीन सबसे शुभ दिनों में से यह आधा शुभ दिन है। वर्ष २०२५ में, भारतीय नववर्ष बुधवार, २२ अक्टूबर को है।

यह दिन 'बलिप्रतिपदा' के नाम से भी जाना जाता है जो कि राजा बलि पर भगवान श्रीविष्णु की विजय का उत्सव है। इस पर्व का उत्सव मनाते हुए, भारतीय मूल के सिद्धयोगी इस विषय में अपनी स्मृतियों व प्रसंगों को हमारे साथ साझा करते हैं।

महाराष्ट्र में व्यापारी-वर्ग अपने व्यापार का नया साल इस दिन से आरम्भ करते हैं। मेरे पिता जी की किराने की दुकान थी, इसलिए यह दिन उनके लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होता। इस दिन पूरी की पूरी दुकान सुवासित गेन्दे के फूलों व आम्र-वृक्ष के पत्तों से बने तोरणों से सजी होती। मेरे पिता जी दुकान की पूजा-वेदी पर पूजा व आरती करके दिन का आरम्भ करते, साथ ही वे दुकान की तिजोरी की भी पूजा करते जिसे वे देवी लक्ष्मी के रूप में पूजते। पूजा-वेदी पर मिठाइयाँ और अन्य पकवान जैसे, लड्डू, चकली और चिवड़ा भी अर्पित करते। तत्पश्चात्, पिता जी पिछले वर्ष का बही-खाता बन्द कर देते और आने वाले वर्ष के समस्त व्यावसायिक कारोबार या लेन-देन के लिए नया बही-खाता बनाते।

पूरे दिन, ग्राहकों को नारियल व मिश्री से बनी मिठाई बाँटी जाती। साथ ही, मित्रगण, परिवार के सदस्यों तथा पड़ोसियों के साथ भी हम मिठाइयाँ और दीपावली पर बने ये व्यंजन बाँटते।

*इन्दोली, भारत*

भारतीय नववर्ष को राजा बलि के नाम से 'बलिप्रतिपदा' भी कहा जाता है। इस दिन लोग कहानियाँ सुनाते हैं कि यह त्योहार कैसे मनाया जाने लगा। मैंने अपने परिवार में यह कहानी इस रूप में सुनी है :

युगों पहले, राजा बलि एक यज्ञ कर रहे थे। यज्ञ के दौरान उन्होंने वहाँ उपस्थित सभी ब्राह्मणवृन्द तथा सम्माननीय अतिथियों को उपहार दिए। उनमें से एक अतिथि थे, भगवान श्रीविष्णु जो राजा बलि की परीक्षा लेने के हेतु से 'वामन' नामक युवा ब्राह्मण का रूप लेकर वहाँ उपस्थित हुए थे। वैसे तो राजा बलि अत्यन्त उदार थे, किन्तु उन्हें अपनी उदारता पर अत्यधिक गर्व भी था।

जब उपहार ग्रहण करने की वामन की बारी आई, तो उन्होंने राजा बलि से उतनी भूमि माँगी जितनी वे अपने तीन पग से नाप सकें। शुक्राचार्य जो राजा बलि के गुरु व परामर्शदाता थे, उन्होंने पहचान लिया कि यह याचना एक परीक्षा है और उन्होंने ज़ोर देकर राजा बलि को परामर्श दिया कि वे युवा ब्राह्मण की इस याचना को अस्वीकार कर दें। तथापि, उनके परामर्श को न मानकर राजा बलि ने वामन को उनकी इच्छित भूमि देने की स्वीकृति दे दी।

जब राजा बलि ने वामन को तीन पग भूमि देने की स्वीकृति दे दी, तब वामन अपना आकार बढ़ाते गए, वे विस्तृत होते गए। उनका रूप इतना विशाल हो गया कि वे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त हो गए। उन्होंने अपना एक पग पृथ्वी पर रखा, और दूसरा पग आकाशगंगाओं पर, और इस तरह उन्होंने इन दोनों स्थानों को राजा बलि द्वारा दिए गए उपहार के रूप में ग्रहण कर लिया। फिर उन्होंने राजा बलि से पूछा कि वे अपना तीसरा पग कहाँ रखें।

अब तक राजा बलि यह जान चुके थे कि वामन साक्षात् भगवान श्रीविष्णु ही हैं। अतः राजा बलि अतीव श्रद्धा व आदर के साथ वामन के समक्ष नतमस्तक हो अपने घुटनों के बल बैठ गए और अपना सिर आगे करते हुए वामन से कहा कि वे अपना तीसरा पग उनके सिर पर रखें। राजा बलि ने जिस घमण्ड के वशीभूत होकर यज्ञ के दौरान उपहार दिए थे, वह सारा घमण्ड अब भगवान के इस अवतार के समक्ष चूर-चूर हो गया।

राजा बलि के इस आत्मसमर्पण से प्रसन्न होकर भगवान श्रीविष्णु ने राजा बलि को व्यापक पाताल लोक के आधिपत्य से गौरवान्वित किया। भगवान श्रीविष्णु ने राजा बलि को यह वरदान भी दिया कि वे कार्तिक माह की प्रतिपदा पर, एक दिन के लिए पृथ्वी पर आकर अपनी प्रजा से

मिल सकते हैं और अपनी नवप्राप्त समझ को उनके साथ साझा कर सकते हैं। राजा बलि का पृथ्वी पर यह वार्षिक पुनरागमन 'बलिप्रतिपदा' के रूप में मनाया जाता है।

*पुणे, भारत*

अहमदाबाद में बड़ा होते समय, हमारे लिए नववर्ष का दिन, नमक बेचने वालों द्वारा गाए जाने वाले 'सबरस' के साथ भोर के समय जल्दी ही शुरू हो जाता। यह गायन इस भाव को व्यक्त करता है, 'जिस प्रकार नमक भोजन के स्वाद को प्रकट करता है, उसी प्रकार आओ हम भी अपने दैनिक जीवन में, अपने अन्दर तथा दूसरों के अन्दर विद्यमान सर्वश्रेष्ठ गुणों को प्रकट करने के उद्देश्य के साथ नववर्ष का आरम्भ करें'।

हमें अपने माता-पिता से दीर्घायु व सुख-समृद्धि भरे जीवन के आशीर्वाद मिलते, और फिर हम नए वस्त्र पहनकर उत्सव के भाव के साथ अपने दिन का शुभारम्भ करते। इस दिन लोग अपने घरों को खुला रखते हैं, ताकि आस-पड़ोस के लोग, मेहमान उनके घर पधारें, और सभी एक-दूसरे को "साल मुबारक" या "नूतन वर्षाभिनन्दन" की बधाइयाँ देते हैं।

नववर्ष का आरम्भ करने के उत्साहपूर्ण भाव के साथ सभी एक-दूसरे से सर्वश्रेष्ठ तरीक़े से व्यवहार करते हैं तथा किन्हीं ग़लतफ़हमियों के लिए एक-दूसरे से क्षमा माँगते हैं। पूरा दिन, मित्रगण से मिलने, आशीर्वाद व शुभकामनाओं के आदान-प्रदान में, स्वादिष्ट भोजन का आनन्द लेने में बीतता; फिर मन में सन्तुष्टि का भाव अनुभव करते हुए, रात्रि को हम सो जाते। हमारे लिए वह अत्यन्त अद्भुत समय होता, और आज भी है।

*अहमदाबाद, भारत*

© २०२५ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।